भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के शल्य चिकित्सा विभाग में दो संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम

भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के शल्य चिकित्सा विभाग में आज दो संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ हुूये। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम उत्तराखण्ड एवं लेह एवं लद्दाख के पशुचिकित्साधिकारियों के लिये आयोजित किये गये हैं। डीएसएचओ, लेह द्वारा प्रायोजित "पशु चिकित्सा निदान इमेजिंग और महत्वपूर्ण नैदानिक प्रक्रियाएं और पशु रोग निदान और नियंत्रण में वर्तमान प्रगति" विषय पर आयोजित किया गया है जबकि अल्ट्रासोनोग्राफी के निदान हेतु हैण्डस आॅन ट्रेनिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम उत्तराखण्ड के पशुपालन विभाग, उतराखण्ड सरकार द्वारा प्रायोजित है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 12 प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे हैं जिनमें लेह से 02 तथा उत्तराखंड के 10 प्रशिक्षणार्थी शामिल हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारम्भ अवसर पर मुख्य अतिथि एवं संस्थान की संयुक्त निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. रूपसी तिवारी ने बताया कि पशुचिकित्सा के क्षेत्र में नित नये शोध तथा नवीन तकनीकियों का उपयोग किया जा रहा है अतः आवश्यकता है पशुचिकित्साधिकारियों को अपने ज्ञान को अपडेट करने की तथा नवीन तकनीकियों को सीखने की। डा. रूपसी तिवारी ने कहा कि जलवायु में परिवर्तन के कारण पशु रोगों में वृद्धि हो रही है। उन्होंने संस्थान के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह संस्थान एशिया का गौरवमयी संस्थान है तथा संस्थान द्वारा की चार मुख्य बीमारियों का उन्मूलन किया गया है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से आशा व्यक्त कि आप यहाँ के ज्ञान को अर्जित कर इसका अपने-अपने क्षेत्रों में प्रयोग करें तथा पशुपालकों एवं कि किसानों के हितों के लिए कार्य करें।

विशिष्ट अतिथि एवं संस्थान के शल्य चिकित्सा विभाग के सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक डा. प्रकाश किंजवेडकर ने कहा कि शल्य चिकित्सा विभाग का एक इतिहास रहा है तथा इस विभाग द्वारा पशु रोगों के निदान सम्बन्धित अनेक तकनीक विकसित की गयी है तथा पशुओं की शल्य चिकित्सा कर उन्हें रोगों से मुक्त कराया है। इस विभाग द्वारा अनेकों प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाते रहें हैं जिनमें अल्ट्रासोनोग्राफी के साथ गाइनोकोलाॅजी तथा शल्य चिकित्सा विज्ञान पर सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक परीक्षण आदि शामिल हैं।

पाठ्यक्रम निदेशक एवं रैफरल पाॅली क्लीनिक प्रभारी डा. अमरपाल ने बताया कि पिछले तीन माह में पशुचिकित्साधिकारियों द्वारा 3 टे"निंग प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये जिनमें फ्रैक्चर मैनेजमेंट, अल्ट्रासोनोग्राफी, कोमल ऊतकों की शल्य चिकित्सा पर आयोजित किये गये हैं। इसी क्रम में यह प्रशिक्षण कार्यक्रम उतराखण्ड एवं लेह-लद्दाख के पशुचिकित्साधिकारियों के लिए आयोजित किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से पशुओं की विभिन्न बीमारियों का अल्ट्रोसोनोग्राफी की मदद से पता लगाकर निदान करने में मदद मिलेगी।

इस अवसर पर शल्य चिकित्सा विभाग के विभगाध्यक्ष डा. मुजम्मल हक ने भी इस तरह के प्रशिक्षण

कार्यक्रम आयोजित कराने की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से आप प्रक्षेत्र में होने वाली परेशानी तथा उसके निवारण के बारे में जान सकेंगें। कार्यक्रम का संचालन शल्य चिकित्सा विभाग के वैज्ञानिक डा. रोहित कुमार द्वारा किया गया जबकि धन्यवाद ज्ञापन प्रभारी वन्य जीव केन्द्र डा. अभिजीत पावड़े द्वारा दिया गया। इस अवसर पर डा. संजीव मेहरोत्रा, डा. उज्जवल डे सहित विभाग के छात्र, अधिकारी एवं कर्मचारीगण मौजूद रहे।